संस्था के उद्देश्य

(1) संस्था के प्रचलित उप विधि (यथा संशोधित) में संस्था गठन के निम्न उद्देश्य नियत किए गए हैं :–

(क) रं समाज में परस्पर तथा रं समुदाय के प्रति लोगों की प्रेम भावना को जगाना।

(ख) रं क्षेत्र, साहित्य, शिक्षा, जन–स्वास्थ्य एवं धर्म संस्कृति के क्षेत्रों को विकसित करने का प्रयास करने के साथ–साथ आपदा राहत एवं समाज सेवा के विविध कार्य करना।

(ग) रं कुटीर उद्योगों के विकास के लिए स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि करना तथा स्थानीय उत्पादों के विपणन की व्यवस्था करना।

(घ) भेड़ पालन को प्रोत्साहन के साथ ऊनी व्यवसाय के लिए अनुकूल माहौल तैयार करना।

(ङ) निर्धन किन्तु प्रतिभावान रं छात्र–छात्राओं को यथासंभव आर्थिक सहायता (छात्रवृत्ति) एवं प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करना।

(च) रं समाज से हो रहे प्रतिभा पलायन को रोकना तथा स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना।

(छ) रं नवयुवकों को रोजगार/स्वरोजगार के अधिक अवसर प्रदान कराने हेतु मार्गदर्शन/प्रशिक्षण प्रदान करना।

(ज) रं समाज के नवयुवकों को क्रीड़ा एवं साहसिक कार्य के क्षेत्र में आगे आने हेतु प्रोत्साहित करना।

(झ) रं समाज एवं क्षेत्र में विभिन्न रचनात्मक कार्यों द्वारा जागृति पैदा करना।

(ञ) घर–गाँवों के आपसी विवादों को दूर करने एवं परस्पर सौहार्दपूर्ण वातावरण सृजन का कार्य करना।

(ट) रं संस्कृति, साहित्य, सामाजिक/आर्थिक व्यवस्था आदि विविध पहलुओं पर शोध/सर्वेक्षण कार्य करना तथा पुस्तकों के साथ–साथ सामयिक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

(ठ) रं संस्कृति को अक्षुण्ण रखने तथा उपर्युक्त विविध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संग्रहालय, पुस्तकालय, वाचनालय, सामुदायिक भवन/सभा कक्ष, क्रीड़ा स्थल तथा विपणन केन्द्र आदि अवस्थापना सुविधाओं का विकास करना एवं संचालन करना।

(ठ) रं संस्कृति को अक्षुण्ण रखने तथा उपर्युक्त विविध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संग्रहालय, पुस्तकालय, वाचनालय, सामुदायिक भवन/सभा कक्ष, क्रीड़ा स्थल तथा विपणन केन्द्र आदि अवस्थापना सुविधाओं का विकास करना एवं संचालन करना।

(ड) वार्षिक समारोह, विचार गोष्ठी तथा विकास/बहुउद्देशीय शिविर (मेला) आदि कार्यक्रम आयोजित करना।

(ढ़) रं प्रतिभाओं को प्रकाश में लाना तथा उनके कार्यों को उजागर कर उन्हें यथोचित सम्मान दिलाना।

(ण) रं ल्वू को विलुप्त होने से बचाने हेतु सक्रिय एवं सकारात्मक उपाय करना।

(त) उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु चन्दा, दान, अनुदान तथा अन्य वित्तीय सहायता प्राप्त करना।

संस्था के उद्देश्य

(1) संस्था के प्रचलित उप विधि (यथा संशोधित) में संस्था गठन के निम्न उद्देश्य नियत किए गए हैं :–

(क) रं समाज में परस्पर तथा रं समुदाय के प्रति लोगों की प्रेम भावना को जगाना।

(ख) रं क्षेत्र, साहित्य, शिक्षा, जन–स्वास्थ्य एवं धर्म संस्कृति के क्षेत्रों को विकसित करने का प्रयास करने के साथ–साथ आपदा राहत एवं समाज सेवा के विविध कार्य करना।

(ग) रं कुटीर उद्योगों के विकास के लिए स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि करना तथा स्थानीय उत्पादों के विपणन की व्यवस्था करना।

(घ) भेड़ पालन को प्रोत्साहन के साथ ऊनी व्यवसाय के लिए अनुकूल माहौल तैयार करना।

(ङ) निर्धन किन्तु प्रतिभावान रं छात्र–छात्राओं को यथासंभव आर्थिक सहायता (छात्रवृत्ति) एवं प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करना।

(च) रं समाज से हो रहे प्रतिभा पलायन को रोकना तथा स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना।

(छ) रं नवयुवकों को रोजगार/स्वरोजगार के अधिक अवसर प्रदान कराने हेतु मार्गदर्शन/प्रशिक्षण प्रदान करना।

(ज) रं समाज के नवयुवकों को क्रीड़ा एवं साहसिक कार्य के क्षेत्र में आगे आने हेतु प्रोत्साहित करना।

(झ) रं समाज एवं क्षेत्र में विभिन्न रचनात्मक कार्यों द्वारा जागृति पैदा करना।

(ञ) घर–गाँवों के आपसी विवादों को दूर करने एवं परस्पर सौहार्दपूर्ण वातावरण सृजन का कार्य करना।

(ट) रं संस्कृति, साहित्य, सामाजिक/आर्थिक व्यवस्था आदि विविध पहलुओं पर शोध/सर्वेक्षण कार्य करना तथा पुस्तकों के साथ–साथ सामयिक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

(ठ) रं संस्कृति को अक्षुण्ण रखने तथा उपर्युक्त विविध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संग्रहालय, पुस्तकालय, वाचनालय, सामुदायिक भवन/सभा कक्ष, क्रीड़ा स्थल तथा विपणन केन्द्र आदि अवस्थापना सुविधाओं का विकास करना एवं संचालन करना।

(ठ) रं संस्कृति को अक्षुण्ण रखने तथा उपर्युक्त विविध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संग्रहालय, पुस्तकालय, वाचनालय, सामुदायिक भवन/सभा कक्ष, क्रीड़ा स्थल तथा विपणन केन्द्र आदि अवस्थापना सुविधाओं का विकास करना एवं संचालन करना।

(ड) वार्षिक समारोह, विचार गोष्ठी तथा विकास/बहुउद्देशीय शिविर (मेला) आदि कार्यक्रम आयोजित करना।

(ढ़) रं प्रतिभाओं को प्रकाश में लाना तथा उनके कार्यों को उजागर कर उन्हें यथोचित सम्मान दिलाना।

(ण) रं ल्वू को विलुप्त होने से बचाने हेतु सक्रिय एवं सकारात्मक उपाय करना।

(त) उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु चन्दा, दान, अनुदान तथा अन्य वित्तीय सहायता प्राप्त करना।